IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

M03/230/S(1)T

HINDI B – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI B – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDU B – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Thursday 8 May 2003 (afternoon)
Jeudi 8 mai 2003 (après-midi)
Jueves 8 de mayo de 2003 (tarde)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1 (Text handling).
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- Ne pas ouvrir ce livret avant d'y être autorisé.
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1 (Lecture interactive).
- Répondre à toutes les questions dans le livret de questions et réponses.

CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos requeridos para la Prueba 1 (Manejo y comprensión de textos).
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

बदल रहा है लखनऊ

लखनऊ का नाम आते ही तसवीर उभरती है नजाकत-नफासत से भरे एक शहर की। जहां दिल में आज भी तहजीब धड़क रही है। अदब जहां की पहचान है। आज के बदलते दौर में यह कैसे संभव है कि लखनऊ समय के बदलाव को नजरअंदाज कर उसी पुराने दौर में सिमटा रहे? मगर इमारतें बदल जाने से समाज नहीं बदलता। हमारे संस्कार, रूढ़ियां, मानसिकता, पूर्वाग्रह वही हों, तो बदलाव कैसा? यहां नए-नए रेस्तरां, पूल पार्लर, फास्ट फूड व पित्जा सेंटर, आधुनिक परिधानों के शो रूम और अनेक कंप्यूटर सेंटर खुल गए हैं। यहां की यातायात व्यवस्था से असंतुष्टि कहें या स्वतंत्रता की भावना, मगर नए-नए दुपहिया वाहनों पर लड़कियों व महिलाओं का दिखना आम बात है। फैशन की चाह, दैनिक जीवन में आसानी या स्मार्टनेस, कारण जो भी हों, मगर नयी पीढ़ी जींस को बड़ी सहजता से स्वीकार कर चुकी है। यहां पर कई डीजे नाइट भी आयोजित हो चुकी हैं, जिनमें लड़कों के साथ लड़कियां भी बड़े उत्साह से भाग ले चुकी हैं।

मगर एक प्रश्न यह भी उठता है कि समय के इस बदलते दौर को हमारे समाज ने किस तरह स्वीकार किया है? क्या इसे सहज लिया जा रहा है या अब भी महानगर होने के बावजूद लोगों की सोच पर कहीं न कहीं कस्बाई मानसिकता हावी है? इस बारे में लखनऊ के एक प्रतिष्ठित कॉन्वेंट स्कूल की शिक्षिका श्रद्धा उपाध्याय का कहना है,''यहां के लोगों को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है। एक तरफ वे लोग हैं, जो शिक्षित व आधुनिकता में ढल चुके हैं। दूसरी तरफ वे लोग हैं जो शिक्षित तो हैं, पर आधुनिक नहीं हैं या अल्प शिक्षित हैं और संकुचित मानसिकता को ढो रहे हैं। आधुनिक हो चुका वर्ग छोटा है, मगर वास्तव में कस्बाई मानसिकता में ही जी रहे हैं।'' लखनऊ विश्वविद्यालय में बी.काम. की छात्रा सुरभि की राय में लखनऊ में मेट्रोपॉलिटन कल्चर कतई नहीं है। अधिकतर लोग अभी भी लड़कियों के बदले हुए पहनावे को ले कर सहज नहीं हो सके हैं और लड़कियों का स्वतंत्र कैरिअर भी उनको पसंद नहीं है।

महानगरवाली मानसिकता का अभाव

अपने कैरिअर के लिए प्रयासरत आराधना का कहना है,''आर्थिक जरूरत कह लो या कैरिअर बनाने की चाह, महिलाएं हर क्षेत्र में आगे आयी हैं, लेकिन यहां के लोगों की मानसिकता में कोई बदलाव नहीं आया है। लड़के-लड़कियों की भले ही कार्यक्षेत्र में घनिष्ठता हो, आज भी इसे लोग प्रेम संबंध का ही नाम देते हैं।'' इसी तरह स्थानीय उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी की कथक नृत्य प्रशिक्षिका रेनू, जो भारत के विभिन्न नगरों का भ्रमण कर चुकी हैं, का मानना है,''लड़कियों की पढ़ाई को ले कर दृष्टिकोण में परिवर्तन अवश्य आया है, परंतु अन्य बातों में नजरिया अभी बदला नहीं है।'' विश्वविद्यालय से एम.ए. की शिक्षा प्राप्त सरिता का भी मानना है,''भले ही लड़कियों को पढ़ा-लिखा दिया हो और अपने को आधुनिक कहते हों, पर उनकी सोच वही सदियों पुरानी है।''

कन्या महाविद्यालय में लेक्चरर विजया के विचार में लखनऊ में दो भागों में स्पष्ट वर्गीकरण दिखता है। एक ओर पुराना लखनऊ, तो दूसरी ओर गोमती पार नया लखनऊ। पुराने लखनऊ में रूढ़िवादिता व पुरानी सोच है, वहीं नए लखनऊ में आधुनिकता व बदलाव है। उनके अनुसार लोग आज लड़कियों की स्वतंत्रता व कैरिअर को सही समझ रहे हैं, फिर भी महानगरवाली मानसिकता का अभाव है। लखनऊ विश्वविद्यालय से स्नातक कर दिल्ली स्थित निफ्ट में कोर्स कर रही सुरभि जोशी के विचार में लखनऊ में अभी अभिभावकों की सोच में अधिक बदलाव नहीं आया है।

पाठांश "ख": सितारों तक पहुँचना संभव होगा?

क्या भविष्य में ऐसा अंतरिक्ष यान बन जाएगा जो गहन अंतरिक्ष में बग़ैर ईंधन के पहुँच सकेगा और दूर के ग्रहों-तारों का विचरण कर आएगा? जी हाँ सौर उर्जा से यह संभव हो सकता है । सूर्य की रोशनी से चलनेवाले पहले अंतरिक्ष यान की तैयारी अंतिम चरणों में है । अमरीकी स्पेस संस्था नासा इस योजना की सफलता का उत्सुकता से इंतज़ार कर रहा है । यह एक निजी प्रयोग है । अमरीका की प्लेनेटरी सोसाइटी पृथ्वी की परिक्रमा करने के लिए एक सौर पंखोंवाले यान के प्रक्षेपण की तैयारी कर रही है । इस प्रयोग से अंतरिक्ष यात्रा के एक नए युग का आरंभ हो सकता है । जिस तरह समुद्र में जहाज़ हवा से चल सकते हैं उसी तरह सूर्य की उर्जा से अंतरिक्ष यान चल सकेंगे । इस तकनीक में बहुत ही पतले, आईने के जैसे सौर पंखों का प्रयोग कर सूर्य के एक-एक कण को पकड़ने का विचार किया गया है । सैद्धांतिक तौर पर यह फ़ोटोन उर्जा को पंख में भेज देंगे जिससे अंतरिक्ष यान आगे बढ़ सकेगा ।

अंतरिक्ष और रोमांच के चाहनेवाले सदा सितारों तक पहुँचने का सपना देखते रहे हैं । यह तो संभव है कि साधारण ईंधन से कोई अंतरिक्ष यान मंगल ग्रह तक पहुँच जाए लेकिन उससे आगे जाना संभव नहीं । सूर्य की उर्जा का प्रयोग कर इसी मानव कल्पना को पूरा करने की कोशिश है ताकि सौर उर्जा के सहारे सुदूर अंतरिक्ष के ग्रहों और सितारों तक पहुँचा जा सके । पहले तो यह बात बहुत असाधारण लगती थी लेकिन अब विज्ञान जगत में ख़ासा उत्साह है कि शायद यह सौर पंख अंतरिक्ष के भीतर जाने की कल्पना को सकार कर दें ।

प्लेनेटरी सोसाइटी के निर्देशक ने लंदन में योजना के बारे में जानकारी दी । उन्होंने कहा कि भविष्य में सौर पंखों का उपयोग सुर्य का चक्कर लगाने या पृथ्वी की तरफ़ टकराने के रास्ते में बढ़ रहे उल्का पिंड का मार्ग बदलने के लिए भी किया जा सकता है

उन्होंने कहा कि धूमकेतुओं और उल्का पिंडों के नमूने लाने के लिए एक योजना की भी संभावना है । इस तरह के वैज्ञानिक उद्देश्यों के अलावा सौर उर्जा पर चलनेवाले यान बनाने के पीछे व्यावसायिक कारण भी हैं । रॉकेट ईंधन की आवश्यकता न रहने पर अंतरिक्ष में आना-जाना काफ़ी सस्ता हो जाएगा । एक अमरीकी कंपनी की तो योजना है कि एक सौर यान में पैसा देनेवाले ग्राहकों की तस्वीरें, संदेश और डी.एन.ए. को तारों के बीच भेजा जाएगा । एक बोतल में संदेश रखकर अंतरिक्ष में भेजने की कीमत को केवल पचास डालर रखा गया है ।

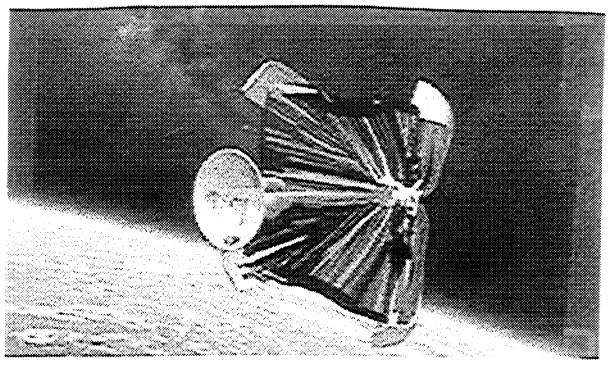

Turn over/Tournez la page/Véase al dorso

पाठांश "ग" : नई पीढ़ी के साथ चलना चाहता हूँ

बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो शिखर पर पहुँचने के बाद भी आगे कुछ और करना चाहते हैं । होता यही है बुलंदी पर पहुँचने के बाद सारे अरमान ख़्त्म हो जाते हैं, लोग संतुष्ट भाव से विश्राम की मुद्रा में आ जाते हैं । सुनहरे दिनों की यादों में खोकर उम्र के बाक़ी दिन काट देते हैं । लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो शिखर पर आकर और आगे बढ़कर अनंत ऊंचाई छूने की तमन्ना रखते हैं । ऐसे ही विरले लोगों में अमिताभ बच्चन भी हैं ।

२९ नई सदी की शुरुआत कई मायने में आपके लिए सुभागी रही । आप क्या कहते हैं ?

३० और अब कोलकाता में आपका मंदिर बन चुका है । कैसा लगता है यह सुनकर ?

३१ उम्र के इस पड़ाव में "कौन बनेगा करोड़पति" जैसे कार्यक्रम के साथ कैसे तालमेल बैठा रहे हैं । स्वयं में कुछ परिवर्तन महसूस कर रहे हैं ?

३२ "कौन बनेगा करोड़पति जूनियर" में बच्चों का साथ कैसा लग रहा है ?

३३ नई पीढ़ी का साथ आपको खटकता नहीं ?

३४ आप अपने व्यक्तित्व को सहज कैसे बनाए रखते हैं ?

३५ आप तीन दशक से इस शो-बिजनेस में टिके हुए हैं । मुश्किलें भी आई होंगी ?

क सौ कड़ियाँ करने के बाद मैं महसूस कर रहा था कि मैंने कुछ ज़्यादा ही बड़ी ज़िम्मेदारी ले ली है । एक बात जो मैंने ख़ास तौर पर महसूस की वह यह है कि हमें अपने शरीर की क्षमताओं का तब तक पता नहीं चलता जब तक हम उन्हें टेस्ट नहीं करते । "कौन बनेगा करोड़पति" का संचालन वाकई बहुत मुश्किल काम है । इस शो को करते हुए अकसर घबराहट भी होती है क्योंकि आपको हर वक़्त सतर्क और गंभीर रहना पड़ता है । प्रतियोगियों के स्वभाव के साथ भी तालमेल बैठाना पड़ता है । अपनी गरिमा भी कायम रखनी पड़ती है । इस कार्यक्रम के पहले मेरा सामान्य ज्ञान कमज़ोर था लेकिन आज मैं काफ़ी कुछ जान गया हूँ ।

ख मेरी हमेशा यही कोशिश रहती है कि मैं हर व्यक्ति से सामान्य बर्ताव करूँ । एक बार स्टूडियो से बाहर आने के बाद और अगले दिन वापस स्टूडियो में प्रवेश करने से पहले मानसिक रूप से एक लक्ष्मण रेखा खींच लेता हूँ कि इस दौरान मुझे एक आम व्यक्ति बनकर रहना है ।

ग कभी नहीं ! ऐसा इसलिए कि मुझे घर में इन बातों की आदत हो गई है । उनकी भाषा, उनका भाव, व्यवहार सभी कुछ वैसा ही है जैसा मेरे घर में होता है । सच कहूँ तो आज की पीढ़ी जीवन की सच्चाई को समझती है । मैं नई पीढ़ी के साथ चलना चाहता हूँ ।

घ मैं एक मामूली इनसान हूँ । आस्तिक हूँ । इसलिए ऐसी ख़बरें अच्छी तो नहीं लगतीं लेकिन मैं उन लाखों-करोड़ों प्रशंसकों की भावनाओं को आहत करने का भी दुस्साहस नहीं कर सकता ।

च यकीनन । लेकिन मेरी ज़िंदगी में उतार-चढ़ाव कई बार आए हैं । कई बार ईश्वर ने मेरी कड़ी परीक्षा ली । कैरियर की इस डांवाडोल पारी को "कौन बनेगा करोड़पति" ने चमकाया । सबसे सुखद पल रहा लंदन में बनी मेरी ख़ुद की मोम की मूर्ति को देखने का अवसर । जब मैंने अपने ही पुतले को देखा तो लगा मैं दर्पण के सामने अपना प्रतिबिंब देख रहा हूँ । ऐसा लग रहा था मानो वह अभी बोल पड़ेगा ।

छ मैं स्वयं आश्चर्य करता हूँ कि यहाँ इतने दिन कैसे गुज़ार गया । यक़ीनन मैंने लंबा सफ़र तय किया है । यह सफ़र कष्टदायक भी रहा है । समस्याओं, अवरोधों और तक़लीफ़ों से जूझने की आदत रही है मेरी ।

ज बहुत अच्छा! वैसे आज के बच्चे बड़ों से ज़्यादा बुद्धिमान हैं । उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है ।

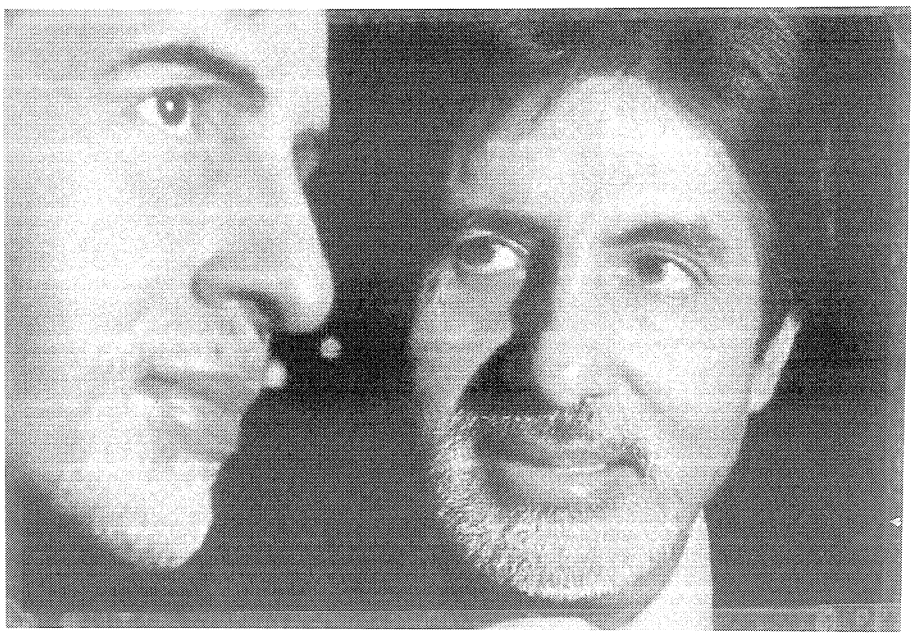

फ़िल्म स्टार अमिताभ बच्चन अपनी मोम की मूर्ति से लंदन के "मैडम टूसौड" मोम म्यूज़ीयम में मिलते हैं ।